पाठ-6

जानकारियाँ बढ़ीं, आपदाएँ घटीं

- संकलित

आइए सीखें

◆ प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी देते हुए उनके निदान का ज्ञान कराना ◆ शब्दों का वाक्यों में प्रयोग सिखाना ◆ वाक्य और उसके प्रकारों का ज्ञान कराना ◆ संवाद शैली से अवगत कराना।

राकेश : माँ, जल्दी नाश्ता बना दो, आठ बज गए हैं।
(माँ राकेश के पिता की ओर देखती है)

सुरेन्द्र : राकेश बेटा, कहाँ जाने की तैयारी हो रही है?

राकेश : आज मैं अपने मित्रगणों के साथ नदी किनारे पिकनिक मनाने जा रहा हूँ।

सुरेन्द्र : आज पिकनिक पर जाना मुझे तो उचित नहीं लगता। देखते नहीं, काले बादलों से आसमान अटा पड़ा है। क्या पता, नदी कब उफान पर आ जाए!

राकेश : पिताजी! वर्षा तो हो नहीं रही है, फिर नदी में बाढ़ कैसे आएगी?

सुरेन्द्र : बेटा! तुम नहीं जानते, वर्षा यहाँ नहीं हो रही है; पर आस-पास के पहाड़ों में हो सकती है। किन्हीं अन्य स्थानों पर हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि यहाँ वर्षा हो तभी नदी में बाढ़ आए। वर्षा ऋतु में कई बार नदियों में अचानक बाढ़ आ जाती है। ऐसे में बचना कठिन हो जाता है। अभी कुछ दिन पहले ही ऐसा एक हादसा हुआ था।

राकेश : अचानक बाढ़ आने का क्या कारण होता है?

सुरेन्द्र : कभी-कभी ऊपरी इलाकों का पानी बाढ़ का रूप ले लेता है।
(पंकज, रोहित आते हैं)

शिक्षण संकेत

◆ वार्तालाप को उचित हाव-भाव एवं विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए वाचन कराएँ ◆ प्राकृतिक आपदाओं से बचने के उपाय बताएँ ◆ वृक्षों की कटाई से होने वाली हानियों का ज्ञान कराएँ ◆ नदियों और रेगिस्तान से होने वाली आपदाओं पर चर्चा करें।

पंकज : राकेश! तुम अभी तक तैयार नहीं हुए?

राकेश : मैं तो तैयार हूँ; पर पिताजी ....।

सुरेन्द्र : राकेश! पंकज! रोहित! क्या तुम सब पिकनिक पर जाना चाहते हो? मौसम को देखते हुए नदी पर पिकनिक मनाने जाना ठीक नहीं है। पता नहीं प्राकृतिक आपदा कब आ जाए?

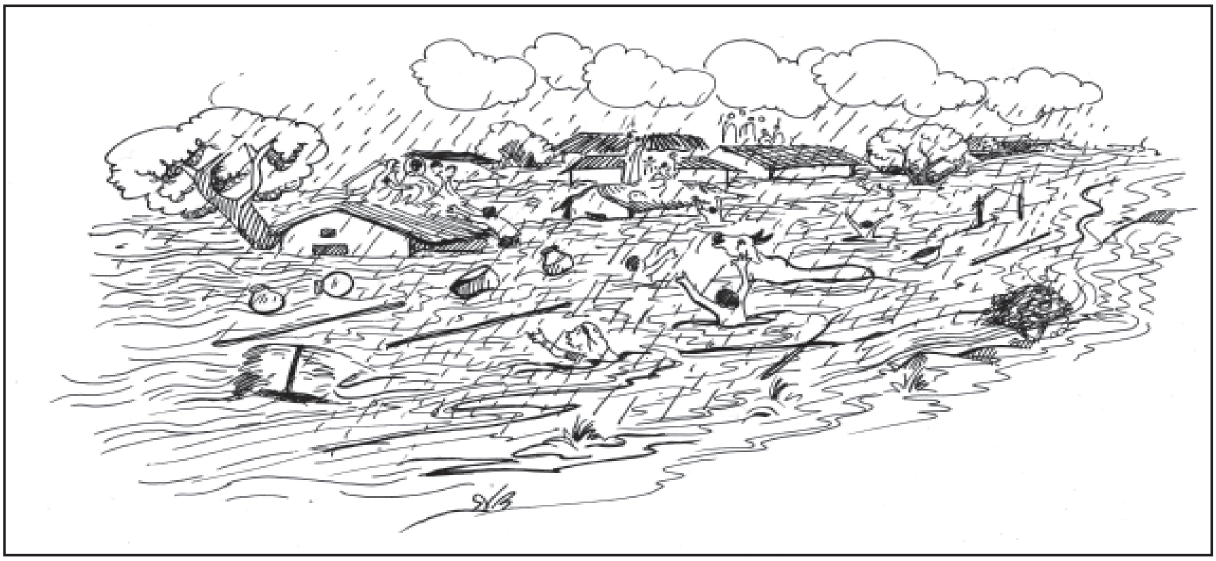

रोहित : यह प्राकृतिक आपदा क्या होती है?

सुरेन्द्र : मैं समझाता हूँ। आओ, यहाँ बैठो। प्राकृतिक आपदा का अर्थ प्रकृति में अचानक होने वाली विध्वंसकारी घटना से है जिससे जन-धन की व्यापक हानि होती है तथा संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

रोहित : ऐसी कौन-कौन सी प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं?

सुरेन्द्र : बाढ़, सूखा, ज्वालामुखी, भूकंप, चक्रवात, मृदा अपरदन आदि कई प्राकृतिक आपदाएँ हैं।

राकेश : पिताजी, बाढ़ तो भारत के पूर्वी क्षेत्र में ही अधिक आती हैं। यह बाढ़ कैसे आती है?

सुरेन्द्र : बाढ़ का सम्बन्ध वर्षा से है। किसी प्रदेश में वर्षा अधिक मात्रा में होती है तो नदियाँ उफनने लगती हैं। बाढ़ का मुख्य कारण प्रकृति ही है, लेकिन साथ ही मनुष्य के क्रिया-कलाप भी जिम्मेदार हैं।

पंकज : प्रकृति और मनुष्य जिम्मेदार कैसे हुए?

सुरेन्द्र : अरे भाई! वनों की कटाई, बादल का फटना, भारी वर्षा होना, भूकंप आना, नदियों की वहन क्षमता कम होना, पानी के प्रवाह में अवरोध होना

आदि सभी कारण प्रकृति और मनुष्य से ही जुड़े हैं।

रोहित : पर पिताजी! बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए कुछ उपाय भी तो किए जाते होंगे?

सुरेन्द्र : बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए सब मिलकर प्रयास करते हैं। सरकार भी कई कार्य करती है। जैसे-जल के बहाव में कमी करने के लिए वन लगवाना। जल प्रवाह मार्ग में नहरी तंत्र का विकास करना, नदियों के किनारों पर तटबंधों तथा बाँधों का निर्माण करवाना, बाढ़ की भविष्यवाणी (पूर्वानुमान) करना आदि।

पंकज : अरेवाह! आज तो हमें नई-नई जानकारियाँ मिल रही हैं?

सुरेन्द्र : प्रकृति की लीला ही अनोखी है। कभी सूखा पड़ता है तो कभी चक्रवात आ जाता है। इन आपदाओं से जन-धन की बहुत हानि होती है।

रोहित : यह चक्रवात क्या होता है? इसके बारे में भी बताइए ना?

सुरेन्द्र : चक्रवात वायुमण्डलीय दबाव में आकस्मिक परिवर्तन के कारण होता है। इसका सम्बन्ध जलवायु से है। समुद्र में प्रलयंकारी तूफान उठता है। प्राकृतिक संतुलन को विकृत करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके प्रभाव से वनस्पति, जीव-जन्तु और मनुष्यों को भारी क्षति उठानी पड़ती है। ये आपदा हमारे देश में बंगाल की खाड़ी के तटीय क्षेत्रों में अधिक होती है। जैसे-पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु आदि।

रानी : इस हानिकारक चक्रवात को रोकने के लिए क्या उपाय किए जाते हैं?

सुरेन्द्र : हाँ! उपाय जानना तो बहुत आवश्यक है। मौसम विभाग को इसकी जानकारी पहले से ही हो जाती है। वायरलेस, रेडियो और टी.वी. से भी चेतावनी प्रसारित कर दी जाती है। चक्रवात से हुए नुकसान का जायजा लेकर पुनर्वास की व्यवस्था की जाती है।

प्रिया : इन आपदाओं की जानकारी मात्र से ही भय लगता है।

रोहित : अच्छा! चाचा यह बताइए कि चक्रवात किस मौसम में आते हैं?

सुरेन्द्र : प्रायः चक्रवात गर्मी के मौसम में अधिक आते हैं।

प्रिया : इसका मतलब बाढ़ वर्षा के भीगे मौसम में और चक्रवात गर्मी के सूखे मौसम में .....।

रोहित : (बीच में ही बात काटकर) सूखे से मुझे याद आया कि सूखा भी तो एक प्राकृतिक आपदा है। इसके बारे में भी बताइए न!

सुरेन्द्र : किसी भी भू-भाग में जब वर्षा की संभावनाएँ न हो अथवा वर्षा न हुई हो तो वहाँ सूखा पड़ता है।

पंकज : यह सूखा क्यों पड़ता है?

सुरेन्द्र : इसके कई कारण हैं। प्रत्यक्ष रूप से भौगोलिक क्षेत्र की जलवायु की दशाओं से इसका सम्बन्ध है, लेकिन कुछ सीमा तक हम मनुष्य भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। मनुष्य ने तीव्र औद्योगिक विकास के चलते वनों को नष्ट कर मानसून की अनुकूल दशाओं को प्रभावित किया है, जैसे मानसून का देर से आना, जल्दी लौट जाना, कम वर्षा होना, मानसूनी वर्षा में लम्बा अन्तराल होना आदि। भू-जल का अन्धाधुंध प्रयोग भी सूखे का कारण है।

राधिका : आप सच कह रहे हैं। अब पहले जैसे वन कहाँ रहे? कटते ही जा रहे हैं। सूखा पड़ने से तो सभी दुःखी होते हैं।

सुरेन्द्र : सूखे से सम्पूर्ण जीव मण्डल प्रभावित होता है, क्योंकि पादप एवं जीव जगत दोनों ही जल पर निर्भर रहते हैं। इससे अनेक जीव-जन्तुओं की प्रजातियाँ नष्ट हो जाती हैं। भू-जल स्तर में कमी आने से कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। चारे की कमी से पशु धन की हानि होती है। औद्योगिक क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है। बेरोज़गारी फैलती है, स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

राकेश : सूखे से निपटने के लिए सरकार क्या-क्या कार्य करती है?

सुरेन्द्र : सूखे की समस्या से निपटने के लिए सरकार दो प्रकार के कार्य करती है।

पहला तो सूखे के कारणों का पता लगाना और दूसरा सूखाग्रस्त क्षेत्रों में राहत कार्य करवाना। सूखे से राहत पहुँचाने के लिए सूखाग्रस्त क्षेत्रों में दौरा कर कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जैसे-रोजगार प्रदान करने के लिए सामुदायिक विकास कार्यक्रम, अकाल राहत कार्यक्रम, मरु विकास कार्यक्रम, जवाहर रोजगार योजना, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, काम के बदले अनाज कार्यक्रम आदि।

रोहित : यह राहत कहाँ से मिलती है?

सुरेन्द्र : केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा।

राकेश : यह राहत किस किस रूप में पहुँचाई जाती है?

सुरेन्द्र : खाद्यान्न व रोजगार के रूप में।

पंकज : आज हमें बहुत-सी नई जानकारियाँ मिली हैं। सच में लोग प्राकृतिक आपदाओं के कारण उनसे बचने के उपायों को जान लें तो आपदा प्रबंधन व्यवस्था का लाभ उठा सकते हैं।

सुरेन्द्र : बातों-बातों में बहुत समय हो गया। हाँ, तुम लोग पिकनिक मनाने कहाँ जा रहे हो?

पंकज : अब इतना जान लेने के बाद आज हम नदी किनारे न जाकर कहीं बाग-बगीचे में जाकर पिकनिक का आनंद लेंगे।

राकेश : चलो चलें।
(सभी मित्रों का प्रस्थान)

शब्दार्थ

प्राकृतिक=प्रकृति से सम्बन्धित। **आपदा**=विपत्ति, मुसीबत। **विध्वंसकारी**=विनाशकारी। **चक्रवात**=बवंडर, बेग से चक्कर खाती हुई हवा जो ऊपर को उठती है। **मृदा**=मिट्टी। **लीला**=खेल। **प्रलयंकारी**=विनाशकारी। **विकृत**=बिगड़ा हुआ। **क्षति**=हानि। **पुनर्वास**=दुबारा बसाना। **मृदा-अपरदन**=मिट्टी का कटाव। **ज्वालामुखी**=धरती से गर्म लावा निकलना।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - ज्वालामुखी - भूमि का कंपन
   - भूकंप - तेज घुमावदार हवाएँ
   - बाढ़ - धरती से गर्म लावा निकलना
   - चक्रवात - अनियंत्रित जल प्रवाह

   (ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   - बाढ़ भारत के .... क्षेत्र में अधिक आती है। (पूर्वी/पश्चिमी)
   - बाढ़ का सम्बन्ध .... से है। (वर्षा/गर्मी)
   - अकाल राहत का कार्यक्रम........ कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किए जाते हैं। (बाढ़ राहत/सूखा राहत)
   - चक्रवात का सम्बन्ध .... से होता है। (जलप्रवाह/जलवायु)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—
   (क) राकेश कहाँ जाने की तैयारी कर रहा था?
   (ख) अचानक बाढ़ क्यों आ जाती है?
   (ग) पाँच प्राकृतिक आपदाओं के नाम लिखिए।

(घ) सूखाग्रस्त क्षेत्रों में राहत किस-किस रूप में पहुँचाई जाती है?

(ङ) बाढ़ के लिए कौन जिम्मेदार है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए—

(क) प्राकृतिक आपदा से क्या अभिप्राय है?

(ख) सूखा पड़ने के कोई तीन कारण लिखिए।

(ग) सूखे को प्राकृतिक आपदा क्यों कहा है?

(घ) बाढ़ नियंत्रण के लिए सरकार क्या व्यवस्था करती है?

(ङ) सूखे से निपटने में सरकार क्या-क्या प्रबंधन करती है?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

नियंत्रण, मित्रगण, प्रलयंकारी, चक्रवात, विकृत

5. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—

बिधवंसकारी, दिनाँक, जीब-जनतु, वियापक, छति

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

बाग-बगीचा, ज्वालामुखी, भूकंप, चक्रवात

ध्यान दीजिए

7. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए—

(क) काले बादलों से आसमान अटा पड़ा है।

(ख) वर्षा नहीं हो रही है।

(ग) आपकी कहाँ जाने की तैयारी हो रही है?

(घ) यदि वर्षा रुक जाती तो हम पिकनिक के लिए चले जाते।

(ङ) शायद ही पिताजी पिकनिक के लिए जाने दें।

(च) माँ जल्दी नाश्ता बना दो।

(छ) सरकार का बाढ़ नियंत्रण बोर्ड सही कार्य करे।

(ज) अरे! तुम अभी तक तैयार नहीं हुए।

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से विदित होता है कि सभी वाक्य एक समान नहीं है। प्रत्येक वाक्य अपने

अलग-अलग अर्थ का बोध करा रहा है। (**क**) वाक्य में सामान्य रूप से बात कही गई है तो (**ख**) वाक्य से काम के न होने का बोध हो रहा है। (**ग**) वाक्य में प्रश्न पूछा गया है और (**घ**) वाक्य में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का संकेत मिलता है। (**ङ**) वाक्य से काम में संदेह प्रकट हो रहा है तो (**च**) वाक्य निवेदन का बोध करा रहा है। (**छ**) वाक्य में इच्छा व्यक्त की गई है और (**ज**) वाक्य विस्मय की प्रतीति करा रहा है। इस प्रकार अर्थबोध कराने के कारण अर्थ के आधार पर आठ प्रकार के वाक्य होते हैं।

यह भी जानिए

आगे तालिका में वाक्यों के प्रकारों के सम्बन्ध में बताया है।

तालिका

स.क्र.	वाक्य प्रकार	आशय	उदाहरण
1.	विधान वाचक	किसी कार्य के होने या करने का सामान्य बोध कराना।	सुरेन्द्र नदी किनारे जाता है।
2.	निषेध वाचक	किसी काम के न होने का बोध कराना।	मोहन नदी किनारे नहीं जाता है।
3.	प्रश्न वाचक	किसी काम के सम्बन्ध में प्रश्न पूछना।	क्या हम पिकनिक के लिए जाएँगे?
4.	संकेत वाचक	जिन वाक्यों में एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का संकेत देती है।	यदि पिताजी कुछ रुपये दे दें तो मैं पुस्तकें खरीद लाऊँगा।
5.	संदेह वाचक	जिन वाक्यों से काम के होने में संदेह हो।	शायद ही आज वर्षा हो!
6.	आज्ञा वाचक	जिन वाक्यों से आज्ञा, निवेदन आदि का बोध हो।	1. तुम बाज़ार जाओ। 2. मुझे पुस्तकें ला दीजिए।
7.	इच्छा वाचक	जिन वाक्यों से दूसरों के लिए आशीर्वाद, इच्छा आदि का बोध हो।	भगवान आपकी मनोकामना पूर्ण करें।
8.	विस्मयादि वाचक	विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, प्रशंसा आदि भाव प्रकट करना।	1. अहो! कितना सुन्दर दृश्य है। 2. छिः! यहाँ कितनी गंदगी है। 3. हाय! बापू चल बसे। 4. शाबास! तुम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

8. विधानवाचक और निषेधवाचक वाक्यों में उदाहरण देकर अन्तर समझाइए।

9. निम्नलिखित वाक्यों के प्रकार लिखिए—

(क) आओ यहाँ बैठो।

(ख) बाढ़ कैसे आती है?

(ग) यदि वर्षा होती तो सूखा नहीं पड़ता।

(घ) शायद मानसून आ जाए।

अब करने की बारी

(क) यदि आपके क्षेत्र में कोई प्राकृतिक आपदा आ जाए तो आप क्या करेंगे?

(ख) अपने आस-पास के ऐसे किसी वीर और साहसी व्यक्ति के विषय में लिखिए जिसने अपने प्राणों की चिंता न कर आपदाग्रस्त लोगों की जान बचाई हो।

(ग) आपदाओं से बचाव के सम्बन्ध में शासकीय योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सूची बनाइए।

❑❑